International Journal of Applied Research 2023; 9(3): 101-104

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2023; 9(3): 101-104
www.allresearchjournal.com
Received: 05-01-2023
Accepted: 13-02-2023

महेश भालसे
शोधार्थी शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, मध्यप्रदेश, भारत

डॉ. अखिलेश कुमार श्रीवास्तव
प्राचार्य, श्रीराम कालेज, रौरा जिला रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

Corresponding Author:
महेश भालसे
शोधार्थी शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, मध्यप्रदेश, भारत

माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास हेतु संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन का अध्ययन

महेश भालसे, डॉ. अखिलेश कुमार श्रीवास्तव

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास हेतु संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन पर आधारित है। न्यादर्ष के रूप में खरगौन जिला के प्रत्येक विकासखण्ड से 04 शहरी एवं 04 ग्रामीण क्षेत्र के कुल 72 माध्यमिक विद्यालयों में से 02–02 शिक्षक कुल 144 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य व 3–3 अभिभावक कुल 216 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र व 10 छात्राएं कुल 1440 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है। शोध क्षेत्र के 88.89 प्रतिशत प्राचार्य, 85.42 प्रतिशत शिक्षक, 67.13 प्रतिशत अभिभावक व 77.36 प्रतिशत छात्र यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास हेतु संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन मानक के अनुरूप हो रहा है।

कूटशब्द : माध्यमिक स्तर, अनुसूचित जाति, विद्यार्थी, योजनाएँ, क्रियान्वयन

1. प्रस्तावना
शिक्षा व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास करती है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति अपनी समस्याओं का समाधान करता है, जीवन को आनन्दमय बनाता है तथा जनकल्याण के कार्यों में प्रवृत्त होता है।
शैक्षिक विविधता, पाठ्यक्रम विषयवस्तु विद्यालय का वातावरण, अध्यापक का व्यवहार, शिक्षण विधि आदि बालक के शैक्षिक समायोजन पर प्रभाव डालते है। जब बालक का शैक्षिक समायोजन अच्छे ढंग से नहीं होता है। तब बालक के अन्दर अप्रसन्ता, भय, क्रोध, ईर्ष्या, लज्जा, संदेह, क्रूरता, चोरी करना, कक्षा से भाग जाना, वस्तुओं की तोड़फोड़ करना, अविश्वास, धोखा देना तथा अनुशासनहीनता आदि लक्षण दिखलायी देने लगते है। जिससे उसका शैक्षिक जीवन डगमगाने लगता हैं तथा बालक कुसमायोजित हो जाता है।
समायोजन में विद्यालय एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विद्यालय में ही बालक के अन्दर तर्क, कल्पना चिन्तन तथा निर्णय शक्ति का विकास होता है। जिससे बालक स्वतंत्र, स्पष्ट व तार्किक रूप से चिन्तन कर सके तथा बालक विद्यालय के वातावरण से अपने को समायोजित कर सके। विद्यालय समायोजन में अध्यापक की भूमिका बालक को अधिक प्रभावित करता है। अध्यापक बालक की समस्या का निदान करके उपचार कर सकता है। विद्यालय में चरित्रवान, बाल मनोविज्ञान से परिचित अच्छे अध्यापकों का होना अनिवार्य है। जो बालक की समस्याओं को मनोवैज्ञानिक ढंग से हल कर सके। बालकों की क्या आवश्यकताएँ हैं? उनकी क्या रूचियाँ है। इन सबकी जानकारी शिक्षक को होना चाहिए। पाठशाला में प्रत्येक बालक को उनकी रूचि तथा योग्यता के अनुसार शिक्षा देनी चाहिए। उन्हें काम करके सीखने के लिए अधिक प्रोत्साहित करना चाहिए। अध्यापक का व्यवहार पक्षपात पूर्ण नहीं होना चाहिए। अध्यापक घर तथा विद्यालय के बीच एक कड़ी का काम करता है। अध्यापक बालक की पारिवारिक समस्या की जानकारी प्राप्त करके उनके माता–पिता के समक्ष रखता है। माता–पिता तथा अध्यापक बालक के समायोजन योग्यता को सबल बनाते है।

2. अध्ययन की आवश्यकता
शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल खरगौन जिले वरन् सम्पूर्ण मध्यप्रदेश के माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास हेतु संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन की वास्तविकता तथा ऐसे सुझाव शोध कार्य के उपरान्त दिये जा सकेंगे जिनका प्रयोग कर राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं व शासकीय प्रयासों व प्रभावों को प्रभावी ढंग से विकसित करने में समर्थ हो सकता है।

इस अध्ययन के द्वारा शैक्षणिक दृष्टि से अल्प विकसित खरगौन जिले के माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास हेतु संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा की जाएगी, वहीं दूसरी ओर इसमें आने वाली कठिनाइयों की जानकारी प्राप्त की जाएगी। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन है जो शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

3. उद्देश्य
किसी भी शैक्षिक शोध के कुछ निश्चित बिन्दु होते हैं। जिनको प्राप्त करने की दिशा मे शोध उन्मुख होता है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य यह है कि शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर के अंतर्गत अनुसूचित जाति के छात्रों के लिए संचालित योजनाओं का कितना तथा किस प्रकार प्रभाव पड़ रहा है। प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्दश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है :–

- प्रस्तुत शोध कार्य के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया जायेगा कि योजनाओं का माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अनुसूचित जाति के नामांकन, उपस्थिति तथा शैक्षिक उपलब्धि स्तर पर क्या प्रभाव पड़ा है?
- योजनाओं के सफल क्रियान्वयन में आने वाली कठिनाइयों एवं समस्याओं का आंकलन कर उन्हें दूर करने हेतु उपाय सुझाया जा सकेगा।

4. शोध की परिकल्पनाएँ
वैज्ञानिक शोध कार्यों में परिकल्पनाओं का विषेश महत्व होता है। शोध का प्रारूप परिकल्पनाओं पर ही आधारित होता है। इसका प्रतिपादन दो प्रकार से किया जाता है– दिशायुक्त परिकल्पना तथा दिशाविहीन परिकल्पना।

यदि दिशायुक्त परिकल्पनाओं को उल्लेख करना है तब उनका सैद्धांतिक आधार अंकित करना चाहिये। इसीलिये आजकल दिशाविहीन परिकल्पनाओं का उल्लेख करते हैं क्योंकि इनके सैद्धांतिक आधार की आवश्यकता नहीं होती है। समस्या के समाधान के सम्भावित रूप को परिकल्पना कहते हैं

शोधार्थी की मान्यता है कि इस अध्ययन के पश्चात् निम्नवत तथ्य प्राप्त होगे–

1. "शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास हेतु संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन मानक के अनुरूप हो रहा है।"

5. शोध समस्या का सीमांकन
शोध कार्य का क्षेत्र जिला खरगौन है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – खरगौन, कसरवाद, महेश्वर, बड़वाह, गोगाँवा, भीकनगाँव, झिरनिया, भगवानपुरा एवं सेगाँव हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास हेतु संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित होगें।

5.1 समष्टि व प्रतिदर्श
माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास हेतु संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श में चयनित जिले के सभी विकासखण्डों से 04 शहरी एवं 04 ग्रामीण क्षेत्र के कुल 72 माध्यमिक विद्यालयों में से 02–02 शिक्षक कुल 144 शिक्षक, प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य व 3–3 अभिभावक कुल 216 अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र व 10 छात्राएं कुल 1440 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

6. अध्ययन विधि
- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साक्षात्कार विधि :** साक्षात्कार शैक्षिक अथवा मनोवैज्ञानिक स्तर पर सम्पन्न की गयी वह प्रक्रिया होती है, जिसमें दो अपरिचित एक दूसरे के निकट आते हैं। गुड तथा हैट ने लिखा है कि, विश्वसनीयता एवं विस्तार तब तक नहीं हो सकता है, जब तक मस्तिष्क में यह स्पष्ट नहीं हो कि साक्षात्कार अनुसंधान की कोई पृथक प्रणाली नहीं है, अपितु आँकड़े प्राप्त करने का एक प्रभावपूर्ण उपकरण है, जो अन्य उपकरणों का पूरक है। यह व्यक्तियों के सम्बन्ध में ज्ञान और अनुभव की वृद्धि करता है, जिसका संकलन साक्षात्कार के अतिरिक्त अन्य प्रणालियों द्वारा किया गया है।

7. शोध उपकरण
प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास हेतु संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन से संबंधित प्राचार्य, शिक्षक, अभिभावक व छात्रों से स्वनिर्मित साक्षात्कार व प्रश्नावली पत्रक द्वारा किया गया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा
पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से अग्रवाल, रीना (2007)[1], गर्ग, चित्रा, (1992)[2], गुप्ता एस.पी. (2001)[3], मेहता, सी. (1970)[4], निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993)[5] त्रिपाठी, मनीष कुमार एवं डॉ. जय सिंह (2016)[6], श्रीवास्तव तथा डॉ. छाया एवं डॉ. जय सिंह (2016)[7] तथा केरकट्ट, बुद्धिमान, (2012)[8] ने शोध विधि एवं आवासीय विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्रों के समायोजन के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. खरगोन जिले का सामान्य परिचय
खरगोन जिला 21°22′ और 22°35′ उत्तरी अक्षांशों और 74°25′ और 76°14′ पूर्वी देशांतरों के बीच स्थित है। जिला उत्तर में धार, इंदौर और देवास, दक्षिण में महाराष्ट्र राज्य के जलगांव जिले, पूर्व में खंडवा, बुरहानपुर और पश्चिम में बड़वानी से घिरा हुआ है। जिले का क्षेत्रफल 8,030 किमी 2 (3,100 वर्ग मील) है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या
शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1 : "शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास हेतु संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन मानक के अनुरूप हो रहा है।"

सारणी क्रमांक 1 : शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास हेतु संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श में चयनित उत्तरदाता	न्यादर्श में चयनित संख्या	माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास हेतु संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन मानक के अनुरूप					
			हो रहा है		नही हो रहा है		पता नही	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्राचार्य	72	64	88ण89	7	9ण72	1	1ण39
2.	शिक्षक	144	123	85ण42	15	10ण42	6	4ण17
3.	अभिभावक	216	145	67ण13	31	14ण35	40	18ण52
4.	छात्र	1440	1114	77ण36	143	9ण93	183	12ण71
योग		1872	1446	77ण24	196	10ण47	230	12ण29
काई वर्ग ;χ^2द्ध			1625ण17					
'पी' मान			0.05 एवं 0.01 स्तर पर सार्थक					

स्वतंत्रता के अंष 2
0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 5.99
0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 9.21

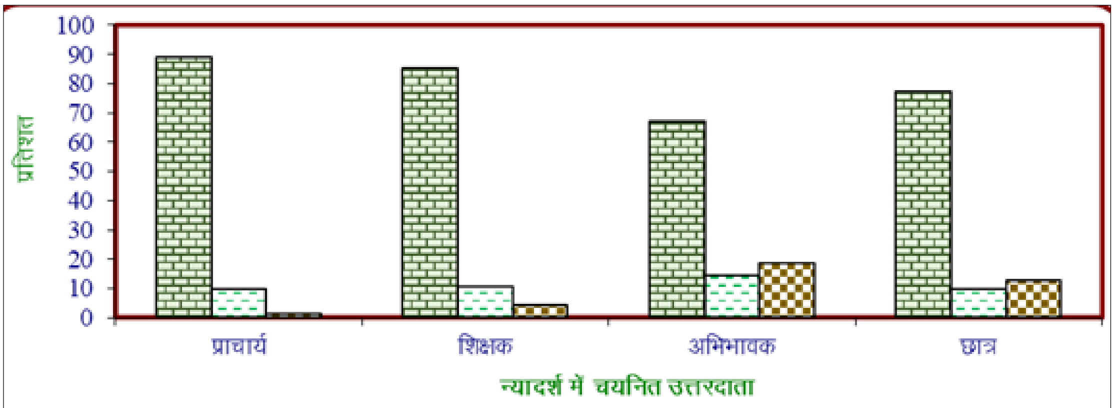

आरेख क्र. 1 : माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास हेतु संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन का आरेखीय निरुपण

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र के 88.89 प्रतिशत प्राचार्य, 85.42 प्रतिशत शिक्षक, 67.13 प्रतिशत अभिभावक व 77.36 प्रतिशत छात्र यह मानते हैं, कि शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास हेतु संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन मानक के अनुरुप हो रहा है और वही पर 14.35 प्रतिशत अभिभावक, 9.93 प्रतिशत छात्र, 10.42 प्रतिशत शिक्षक व 9.72 प्रतिशत प्राचार्यो का अभिमत हैं, कि माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास हेतु संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन मानक के अनुरूप नहीं हो रहा है।

अतः शोध क्षेत्र के न्यादर्श में चयनित 77.24 प्रतिशत अभिमतानुसार माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास हेतु संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन मानक के अनुरूप हो रहा है।

इसी प्रकार तीनों समूहों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अन्तर है, क्योंकि गणना से प्राप्त 'काई' वर्ग का मान 1625.17 आया है, जो कि 0.05 एवं 0.01 सार्थकता स्तर एवं स्वतंत्रता के अंश 2 पर सारणी के मान क्रमशः 5.99 एवं 9.21 से अधिक है। अतः उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से स्पश्ट होता है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास हेतु संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन मानक के अनुरुप हो रहा है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

निष्कर्ष

किसी भी शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्ष किये गये शोध कार्य को मान्यता प्रदान करते है। प्रस्तुत शोध के प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त हुए तथ्यों के आधार पर प्राप्त शोध निष्कर्षो का विवरण निम्नानुसार हैं–

1. शोध क्षेत्र के 88.89 प्रतिशत प्राचार्य यह मानते हैं, कि माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास हेतु संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन मानक के अनुरुप हो रहा है।
2. शोध क्षेत्र के 85.42 प्रतिशत शिक्षक यह मानते हैं, कि माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास हेतु संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन मानक के अनुरुप हो रहा है।
3. शोध क्षेत्र के 67.13 प्रतिशत यह मानते हैं, कि माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास हेतु संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन मानक के अनुरुप हो रहा है।
4. शोध क्षेत्र के 77.36 प्रतिशत छात्र यह मानते हैं, कि माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों के विकास हेतु संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन मानक के अनुरुप हो रहा है।

सन्दर्भ

1. अग्रवाल, रीना – परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति : एक अवलोकन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 2007, वर्ष 26, अंक 21.
2. गर्ग, चित्रा, ''दसवीं कक्षा में अनुर्तीण विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बनध सामाजिक, आर्थिक स्तर, बौद्धिकता तथा समायोजन का अध्ययन, आगरा, 1992.
3. गुप्ता एस.पी. – ''आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद संस्करण, 2001.

4. मेहता, सी. – 'नेशनल पॉलिसीर ऑफ एलिमेन्ट्री टीचर एजूकेशन इन इण्डिया'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1970.
5. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. –''भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें'' (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.
6. त्रिपाठी, मनीष कुमार एवं डॉ. जय सिंह (2016) "रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" International Journal of Multidisciplinary Education and Research. 2016 Nov;1(9):05-07.
7. श्रीवास्तव, डॉ. छाया एवं डॉ. जय सिंह (2016) – "माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता का अध्ययन (सतना जिले के संन्दर्भ में)" International Journal of Multidisciplinary Education and Research. 2016 May;1(3):63-65.
8. केरकट्ट, बुद्धिमान, 2012, ''पश्चिम ओडिशा संभाग में केन्द्रीय विद्यालयों में माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत अनुसूचित जनजाति के छात्रों की संस्कृत के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन'' राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरूपति, आन्ध्रप्रदेश।